INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान SI

उपनिरीक्षक / प्लाटून कमांडर

भाग – 2

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/c37ssj

Online Order करें - https://shorturl.at/mpOV7

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2024)

क्र.सं.	अध्याय	पेज
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	17
3.	ऐतिहासिक (केंद्र)	25
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां	30
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व प्रणाली	84
6.	स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)	99
7.	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	106
8.	राजस्थान का एकीकरण	110
9.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	115
10.	प्रजामण्डल आंदोलन	124
	कला एवं संस्कृति	
1.	वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ – • किले और स्मारक (छतरियाँ) • राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ • प्रमुख महल	135
2.	चित्रकला	155
3.	हस्त कला / हस्तशिल्प	165
4.	राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ	173
5.	राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ	181
6.	वेशभूषा एवं आभूषण	185
7.	मेले एवं त्यौहार	188

8.	राजस्थान के लोकसंगीत (लोकगीत)	199
9.	राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	206
10.	राजस्थानी संस्कृति परम्पराएं और विरासत प्रथाएं	220
11.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय	225
12.	राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	234
13.	महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल	244
14.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	246

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौंने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)

- ***मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण*** *में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।*
- *बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।*

<u>कांस्ययुगीन सभ्यताएं</u> *-*

2. *<u>कालीबंगा की सभ्यता -</u>*

*कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - **सरस्वती नदी** । इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।*

<u>इस सभ्यता की खोज -</u>

- *इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।*
- *इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।*
- *इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।*

1. ***बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)***
2. ***बीके (बालकृष्ण) थापर***

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

<u>एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में -</u>

- *ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।*
- *उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।*
- *बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।*

1. *पूर्वी राजस्थानी* 2. *पश्चिमी राजस्थानी*

- *इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।*
- *कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।*
- *कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।*
- *हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।*

<u>इस सभ्यता की विशेषताएँ -</u>

- *इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **<u>समकोण</u>** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को '**लाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति**' के नाम से भी जानते हैं।*
- *मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।*
- *इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।*
- *यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।*

*(विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)***

- *विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।*
- *यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।*
- *यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।***
- *यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।*
- *इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे।*
- *विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।*
- *यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था*

- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना ।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौ, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

मृतक संस्कार :

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं ।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

आर्थिक जीवन :

- कालीबंगा के भग्नावशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों का जीवन सामान्य रूप से समृद्ध था। सुख एवं समृद्धि के लिए लोगों ने विभिन्न साधनों का उपयोग किया था।
- कालीबंगा के निवासी कौन-कौन से पशु पालते थे, इसका ज्ञान हमें पशुओं के अस्थि अवशेषों, मृद पात्रों पर किये गये चित्रांकनों, मुद्रांकनों तथा खिलौनों से होता है। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था ।
- **सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौ और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था।
- स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृदभाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।
- वह विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृदभाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवतः अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।
- इन मृदभाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ अर्द्धवृत्त, एक-दूसरे को काटते वृत्त, शल्कों का समूह आदि के प्रारूपण प्रमुख हैं।

गुहिल वंश (सिसोदिया) के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- **विजयभूप** ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहाँ इनका शासन सदियों तक रहा । विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में **शिलादित्य** नामक व्यक्ति **वल्लभीनगर** का शासक बना । राजस्थान के आबू में उस समय **परमार वंश** का शासन था, जिनकी राजधानी **चंद्रावती** थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास **अबुर्दा देवी मंदिर** चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ौसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । **पुष्पावती** ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होंने अन्यत्र जाने का फैसला किया । रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित **वीरनगर** नामक स्थान पर पहुंची। यहाँ वह **कमलाबाई** नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गई। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम **गुहिल** रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।
- बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था । भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे । वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया । बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुँचा । लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था । अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आसपास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था । गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें । गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे, और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगे। **566** ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। **बप्पा रावल का जन्म** मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 19 वर्ष **713 ई.** में **ईडर** में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को **सिसोदिया** भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् **723** के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किन्तु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।
- परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । **सन् 712 ई.** में मुहम्मद कासिम से सिंध को जीता।
- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी । 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया **बप्पा रावल ने सिंध** के **मुहम्मद बिन कासिम** को पराजित किया बप्पा रावल ने ग़ज़नी के शासक सलीम को पराजित किया बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिसौंदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासरंक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवतः जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन्

753) ई. दिया है। एक दूसरे एकलिंग माहात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था।

- उन्होंने शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था, और **चित्तौड़ को अपनी राजधानी** बनाया । बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप **'एकलिंग जी'** को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे।
- **बप्पा रावल के सिक्के** : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के **सोने के सिक्के को बप्पा रावल** का माना है। इस सिक्के का तोल 11.5 ग्रेन **(65 रत्ती)** है। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है, **बाई ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग** बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। सिक्के के पीछे की तरफ चमर, सूर्य, और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। बप्पा रावल के बारे में कुछ तथ्य द्वारा बप्पा रावल को **कालभोजादित्य** के नाम से भी जाना जाता है इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था। 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया। बप्पा रावल को **हारीत ऋषि** के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है।
- **एकलिंग जी का मंदिर** - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मंदिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया । इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।
- 753 ई. में बप्पा रावल ने 39 वर्ष की आयु में सन्यास लिया। इनका समाधि स्थान एकलिंगपुरी से उत्तर में एक मील दूर स्थित है। इस तरह इन्होंने कुल 19 वर्षों तक शासन किया। बप्पा रावल का देहान्त **नागदा** में हुआ, जहाँ इनकी समाधि स्थित है। शिलालेखों में वर्णन - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति** में बप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है आबू के शिलालेख में बप्पा रावल का वर्णन मिलता है कीर्ति स्तम्भ शिलालेख में भी बप्पा रावल का वर्णन मिलता है रणकपुर प्रशस्ति में बप्पा रावल व कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है। हालांकि आज के इतिहासकार इस बात को नहीं मानते । कर्नल जेम्स टॉड को 8वीं सदी का शिलालेख मिला, जिसमें मानमोरी (जिसे बप्पा रावल ने पराजित किया) का वर्णन मिलता है। कर्नल जेम्स टॉड ने इस शिलालेख को समुद्र में फेंक दिया।
- यह हारीत ऋषि का अनुयायी था । **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- 734 ई. में मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ पर कब्जा किया।
- राजधानी - नागदा (उदयपुर) सास बहु का मंदिर, नागदा में एक लिंग मंदिर (शिवजी) का निर्माण करवाया।
- मेवाड़ के राजा खुद को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।
- बप्पा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुये गजनी तक चला गया।
- इसने गजनी के शासक सलीम को हटा दिया और अपने भान्जे को वहाँ का शासक बनाया ।
- मेवाड़ में सोने के सिक्के चलाये ।
- सोने के सिक्के का भार 11.5 ग्रेन था ।
- बप्पा का वास्तविक नाम **काल भोज** था।
- सी.वी वैद्य ने बाप्पा रावल को राजस्थान का चार्ल्स मेटकोफ, कहा ।

अल्लट (951-971 ई.)

- अल्लट 951 ई. में मेवाड़ के शासक बने । आहड़ से प्राप्त शक्तिकुमार का लेख 977 ई. के अनुसार अल्लट की माता महालक्ष्मी का राठौड़ वंश की होना तथा अल्लट की राणी **हरियदेवी** का हूण राजा की पुत्री होना और उस राणी का हर्षपुर गांव बसाना अंकित है, अल्लट ने आहड़ को राजधानी बनाई व यहाँ वराह मंदिर का निर्माण करवाया। यह लेख टॉड को मिला था । यह अपूर्ण लेख उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है ।
- राजा अल्लट के समय (वि. सं 1010) के शिलालेख से सारणेश्वर के मंदिर का छबना बनाया गया था।
- राजा अल्लट के समय का लेख मूल में **आदि वराह मंदिर** में लगा हुआ है जो मेवाड़ के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
- अल्लट ने मेवाड़ में सबसे पहले नौकरशाही का गठन किया।

शक्तिकुमार (977-993 ई.)

- गुहिल शासक शक्तिकुमार के समय मे मालवा के परमार राजा मुंज ने चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- मुंज के वंशज राजा भोज ने "त्रिभुवन नारायण शिव मंदिर' जिसे अब "भोकल का समिद्धेश्वर मंदिर" कहते हैं, का निर्माण करवाया।
- राजा भोज 1012-1031 ई. के मध्य चित्तौड़ मे रहा था।
- 11 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक मेवाड़ परमारों के अधीन रहा। इसके बाद चालुक्यों ने परमारों से मेवाड़ छीन लिया।

रणसिंह (कर्णसिंह) (1158 - 68 ई.) :-

- गुहिल शासक रणसिंह जिसको कर्णसिंह भी कहते हैं, 1158 ई. मे मेवाड़ का शासक बना।

- रणसिंह के पुत्र **क्षेमसिंह** ने मेवाड़ की रावल शाखा को जन्म दिया।
- रणसिंह के अन्य पुत्र राहप ने सीसोदा ग्राम की स्थापना कर **राणा शाखा** की नींव डाली। जो **सिसोदा** में रहने के कारण सिसोदिया कहलाए।

क्षेमसिंह

- इसके दो पुत्र **सामन्तसिंह व कुमारसिंह** हुए।
- सामन्तसिंह **1172 ई.** में मेवाड़ का शासक बना लेकिन नाडौल (जोधपुर) के चौहान राजा कीतू (कीर्तिपाल) ने सामन्त सिंह से मेवाड़ राज्य छीन लिया तथा सामन्तसिंह ने वागड़ में अपना राज्य स्थापित किया।

कुमारसिंह

- कुमारसिंह (क्षेमसिंह का पुत्र) ने 1179 ई. में कीर्तिपाल को पराजित कर मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।
- कुमारसिंह का वंशज जैत्रसिंह (1213-1253 ई.) प्रतापी और वीर राजा हुआ।

जैत्र सिंह (1213 – 1252 / 53 ई.)

- सामन्त सिंह के पश्चात् के प्रमुख शासकों में एक जैत्र सिंह 1213 ई. में मेवाड़ के शासक बने। इनका शासनकाल 1213 ई. से 1252 ई. के आस-पास था। जैत्र सिंह उस समय के मेवाड़ शासकों में सबसे शक्तिशाली शासक थे। तुर्क गुलाम शासक **इल्तुतमिश** व जैत्र सिंह के मध्य गोगुन्दा के पास भूताला (गिर्वा, उदयपुर) नामक स्थान पर युद्ध (सम्भवतः **1227 ई.** में) हुआ। समय सीमा तय नहीं होने के कारण इतिहासकारों द्वारा **इल्तुतमिश** के मेवाड़ पर आक्रमण की अवधि 1222 ई. से 1229 ई. के बीच मानी गई है। इस आक्रमण में जैत्र सिंह व इल्तुतमिश की सेनाओं के मध्य जबरदस्त टक्कर हुई जिसमें इल्तुतमिश को पीछे हटना पड़ा। हालांकि इन युद्धों में राजधानी नागदा में काफी तोड़फोड़ व नुकसान होने के कारण जैत्र सिंह ने अपनी राजधानी को नागदा से चित्तौड़ स्थानांतरित कर दिया। जैत्र सिंह की इस सफलता का प्रमाण आबू शिलालेख, चीरवा शिलालेख हैं। 1248 ई. में नासुरुद्दीन महमूद द्वारा मेवाड़ आक्रमण का भी सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया। राजस्थानी इतिहासकार **डॉ. दशरथ शर्मा** के अनुसार जैत्र सिंह का शासनकाल मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्ण काल था। जैत्र सिंह के प्रमुख सेनानायकों में बालक और मदन प्रमुख थे।
- अपने पूर्वजों के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए उसने उस समय के **सोनगरा चौहान** शासक उदयसिंह चौहान पर आक्रमण कर दिया। उदयसिंह ने जैत्रसिंह के साथ संधि कर ली तथा अपनी पुत्री चचिक देवी/रूपा देवी का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह के साथ कर दिया।
- **भूताला का युद्ध** :- जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के बीच हुआ जिसमें जैत्रसिंह जीत गया था।
- जयसिंह सूरी की पुस्तक **'हम्मीर मदमर्दन'** भूताला युद्ध की जानकारी देती है।

तेजसिंह (1250-1273 ईस्वी.)

- जैत्रसिंह के पश्चात् उसका पुत्र तेज सिंह मेवाड़ का शासक बना। इसकी शासनावधि 1252 ई. से 1273 ई. तक थी। तेज सिंह भी अपने पिता जैत्र की ही तरह पराक्रमी थे। तेजसिंह के शासनकाल में तुर्क शासक **गयासुद्दीन बलबन** ने मेवाड़ पर आक्रमण किया लेकिन उसे मेवाड़ सेना के प्रतिरोध के फलस्वरूप पीछे हटना पड़ा।
- तेज सिंह की पत्नी **रानी जयतल्ल देवी** ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया। तेजसिंह के शासनकाल में मेवाड़ चित्रशैली का पहला चित्रित ग्रंथ श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णि लिखा गया था।
- इनकी उपाधि - उमापतिवारलब्ध तथा इनकी रानी का नाम जेतल दे था।
- तेजसिंह के समय मेवाड़ का प्रथम चित्रित ग्रंथ - 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी जिसके लेखक कमलचंद थे।
- तेजसिंह ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

समरसिंह (1273-1302 ई.)

- रावल समर सिंह एक योग्य व प्रतापी शासक था। उसने शत्रुओं का संहार कर गुजरात का तुर्कों से उद्धार किया। चीरवा शिलालेख में समर सिंह को शत्रुओं की शक्ति का अपहरणकर्ता व कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में उसे शत्रुओं का संहार करने में शेर के समान बताया गया है। आबू के शिलालेख के अनुसार समर सिंह ने गुजरात को तुर्कों से मुक्त कराया। समर सिंह के शासनकाल 1273 ई. से 1302 ई. के बीच था। रावल समर सिंह के दो पुत्र थे रतन सिंह व कुंभकर्ण। रावल सिंह मेवाड़ का उत्तराधिकारी बना जबकि **कुंभकर्ण** ने नेपाल में गुहिल सत्ता की स्थापना की।
- समरसिंह के शासन काल में उसके पुत्र कुंभकर्ण ने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की तथा दूसरे पुत्र रतनसिंह ने चित्तौड़ पर शासन किया।

रतन सिंह (1302-1303)

- रावल समरसिंह के पश्चात् रावल रतनसिंह ने मेवाड़ का शासक बना
- इसका शासनकाल 1302 ई.- 1303 ई. तक का था।
- रावल रतन सिंह रावल शाखा का अंतिम शासक था।
- इनका दरबारी विद्वान राघव चेतन था।

रानी पद्मिनी –

- रानी पद्मिनी सिंहल द्वीप (श्रीलंका) के राजा गंधर्वसेन व रानी चंपावती की पुत्री थी।
- पद्मिनी की सुन्दरता का बखान हीरामन जाति का तोता करता था।
- रानी पद्मिनी रतनसिंह का गधर्व विवाह हुआ।
- पद्मिनी व रतनसिंह के विवाह के पश्चात् गौरा (रानी पद्मिनी के चाचा) – बादल (रानी पद्मिनी के भाई) व 1600 महिलाऐं पद्मिनी के साथ मेवाड़ आई।

प्रतापगढ़ प्रजामण्डल

- प्रतापगढ़ में 1931-32 में स्वदेशी वस्त्र,खादी प्रचार और मद्यनिषेध का प्रचार-प्रसार कर जन जागृति फैलाई थी। इसके लिए मास्टर रामलाल, राधावल्लभ सोमानी, रतन लाल के नेतृत्व में प्रतापगढ़ में आंदोलन किया गया।
- प्रतापगढ़ में जन जागृति फैलाने का मुख्य कार्य अमृत लाल पायक ने किया था। हरिजन उत्थान के लिए ठक्कर बप्पा की प्रेरणा से 1936 में अमृत लाल पायक ने प्रतापगढ़ में हरिजन पाठशालाकी स्थापना की थी।
- 1945 में चुन्नी लाल प्रभाकर और अमृत लाल पायक के नेतृत्व में प्रतापगढ़ प्रजामण्डल की स्थापना की गई। 1947 को महारावल ने प्रतापगढ़ मे लोकप्रिय मंत्री मण्डल के गठन की घोषणा की। 2 मार्च 1948 में प्रजामण्डल के 2 प्रतिनिधि माणिक्य लाल और अमृत लाल पायक मंत्रिमण्डल में ले लिए गए।
- 25 मार्च 1948 को प्रतापगढ भी राजस्थान संघ का अंग बन गया।

किशनगढ़ प्रजामण्डल

किशनगढ़ में कांति लाल चौथानी ने 1930 में उपचारक मण्डल की स्थापना की थी। किशनगढ़ राज्य में श्री कांति लाल चौथानी के प्रयासों से 1939 में प्रजामण्डल की स्थापना की गई। इस प्रजामण्डल का अध्यक्ष श्री जमाल शाह को बनाया गया और इसका मंत्री महमूद को बनाया गया था। राज्य की ओर से प्रजामण्डल की स्थापना का कोई विरोध नहीं किया गया। 1942 में किशनगढ़ प्रजामण्डल ने चुनाव लड़ा और बहुमत प्राप्त किया। महाराजा किशनगढ़ ने 15 अगस्त 1947 से पूर्व एक संधि-पत्र पर हस्ताक्षर कर किशनगढ़ को भारतीय संघ का एक अंग बना दिया था। किशनगढ़ भी 1948 में राजस्थान संघ में विलय हो गया था।

राजस्थान में प्रजामण्डल

प्रजामण्डल नाम	स्थापना	गठनकर्ता	अध्यक्षता	प्रमुख नेता/ उद्देश्य कार्य / सहयोगी
जयपुर प्रजामण्डल	1931	जमनालाल बजाज	कपूर चन्द्र पाटनी	हीरालाल शास्त्री, जमनालाल बजाज
	1936			हीरालाल शास्त्री, बाब हरिश्चन्द्र, टीकाराम पालीवाल, लादूराम जोशी, हंस डी. राय. पूर्णानन्द जोशी
बूँदी प्रजामण्डल	1931	कांतिलाल	कांतिलाल	नित्यानन्द सागर, गोपाललाल कोटिया,गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल,पूनम चन्द्र
बूँदी राज्य प्रजा परिषद्	1937	ऋषिदत्त मेहता	चिरंजीलाल मिश्र	बृज सुन्दर शर्मा
हाड़ौती प्रजामण्डल	1934	पं. नयनूराम शर्मा	हरिमोहन माथुर	प्रभुलाल शर्मा, पं. अभिन्न हरि
मारवाड़ (जोधपुर) प्रजामण्डल	1934	जयनारायण व्यास	मोहम्मद	आनन्दराज सुराणा, मथुरादास माथुर, रणछोड़दास गट्टानी, इन्द्रमल जैन, कन्हैयालाल मणिहार, चांदकरण शारदा, छगनलाल चौपसनीवाल, अभयमल मेहता
सिरोही प्रजामण्डल (बम्बई)	1934	वृद्धिकर त्रिवेदी	भंवरलाल सर्राफ	रामेश्वर दयाल, समर्थमल, भीमशंकर
सिरोही प्रजामण्डल	1939	गोकुल भाई	गोकुल भाई	धर्मचन्द्र सुराणा, रामेश्वरदयाल, रूपराज, जीवनमल, घासीलाल चौधरी, पूनमचन्द
बीकानेर राज्य प्रजामण्डल (कलकत्ता)	1936	मछाराम वैद्य	मछाराम वैद्य	लक्ष्मणदास स्वामी एवं अन्य राजस्थानी प्रवासी
बीकानेर प्रजामण्डल	1936	मछाराम वैद्य	मछाराम वैद्य	लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक
बीकानेर राज्य परिषद्	1942	रघुवरदयाल गोयल	रघुवरदयाल गोयल	लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक
कोटा प्रजामण्डल	1939	पं. नयनूराम शर्मा	पं. नयनूराम शर्मा	पं. अभिन्न हरि, तनसुखलाल मित्तल, शंभूदयाल सक्सेना, बेनी माधव प्रसाद
मारवाड़ लोक	1938	जयनारायण व्यास	रणछोड़दास	आनन्दराज सुराणा और भंवरलाल

कला संस्कृति

अध्याय – I

वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ

किले और स्मारक (छतरियाँ)

राजस्थान के प्रमुख किले (दुर्ग)

- राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
- दुर्ग में महल, शस्त्रगार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ, तालाब, कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
- भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे-

(i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग

- भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।
- **शुक्र नीति के अनुसार ९ प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न हैं-**
- शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

I. एरन दुर्ग

- यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से - निर्मित होता है।
- उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग

2. धान्वन (मरुस्थल) दुर्ग

- ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते है।
- उदाहरण- जैसलमेर, बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।

3. औदक दुर्ग (जलदुर्ग)

- ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते है।
- उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।

4. गिरि दुर्ग

- ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
- उदाहरण- कुम्भलगढ़, तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)

5. सैन्य दुर्ग

- जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो।
- ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं।

6. सहाय दुर्ग

- जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।

7. वन दुर्ग

- जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।
- उदाहरण- सिवाना दुर्ग, त्रिभुवनगढ़ दुर्ग, रणथम्भौर दुर्ग।

8. पारिख दुर्ग

- वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।
- उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग, भरतपुर।

9. पारिध दुर्ग

- जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी - बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।
- उदाहरण-चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़ दुर्ग।

❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए -भटनेर (हनुमानगढ़)

❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)

❖ राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग

❖ राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग –सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल ९९ बुर्ज)

❖ राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग -बोरासवाड़ा / टॉडगढ़ (ब्यावर)

❖ राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)

❖ राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग -मोहनगढ़ (जैसलमेर)

❖ वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर

❖ **चितौड़गढ़ का किला**

- **उपनाम-** चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्त्व सर्वाधिक है।

- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है " गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया। "
- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृत्ति व्हेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी - तेल बावड़ी,कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड,रामकुंड व चित्रांगद मौरी तालाब प्रमुख है।
- **इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न हैं-**

  प्रथम साका वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।

  द्वितीय साका वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।

  तृतीय साका वर्ष 1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल – फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।

- **इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं-**

1. पाडन पोळ / पावटन पोळ - यहाँ देवलिया के रावत बाघसिंह की छत्री है।
2. भैरों पोळ - यहाँ कल्ला राठौड़ की 4 खम्भों तथा, जयमल राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी है।
3. हनुमान पोळ
4. लक्ष्मण पोळ
5. जोड़न पोळ
6. त्रिपोलिया पोळ
7. रामपोळ - यहाँ फत्ता सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।

❖ **दुर्ग में स्थित दर्शनीय प्रमुख स्थल**

- **कुम्भा द्वारा निर्मित-** कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, चार दीवार, सात द्वार
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भण्डार/ महल (यहाँ पर स्वामिभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान दिया) व तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- इस दुर्ग में जयमल, फत्ता, कल्ला राठौड़, रैदास, बाघसिंह की छतरियाँ हैं ।
- दुर्ग में पद्मिनी महल, गौरा - बादल महल, पुरोहितों की हवेली, फतेहमहल, भामाशाह की हवेली, सलूम्बर हवेली, रामपुरा हवेली, आहाड़ा हिंगलू का महल, रतनसिंह महल, आल्हा काबरा की हवेली, राव रणमल की हवेली प्रमुख हैं।

❖ **विजय स्तम्भ**

- यह चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इमारत है।
- ऊँचाई-122 फीट
- चौड़ाई 30 फुट है
- 9 मंजिला जिसका
- निर्माण 1440-48 ई.
- इसमें 157 सीढ़ियाँ
- निर्माण में 90 लाख का खर्चा
- शिल्पी जैता,नाथा, पामा, पूंजा
- तीसरी मंजिल पर 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा
- इसकी 8वीं मंजिल पर कोई मूर्ति नहीं
- **विजय स्तम्भ के उपनाम**

- **विक्ट्री टावर,**
- **रोम के टार्जन के समान -फर्ग्युसन**
- **कुतुबमीनार से श्रेष्ठ - कर्नल जेम्स टॉड**
- **हिन्दू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि - आर. पी. व्यास**
- **संगीत की भव्य चित्रशाला – डॉ. सीमा राठौड़**
- **लोकजीवन का रंगमंच - गोपीनाथ शर्मा**
- **विष्णु ध्वज - उपेन्द्रनाथ डे कीर्ति**
- इसका निर्माण राणा कुम्भा ने सारंगपुर विजय (1437 ई.) के उपलक्ष में करवाया।

- इस किले में प्राचीन नाली व्यवस्था है, जो वर्षा जल को आसानी से निकाल देती है, उसे 'घूट नाली' कहते हैं।

❖ बीकानेर दुर्ग

- जूनागढ़ दुर्ग बीकानेर के पुराने गढ़ की नींव बीकानेर के संस्थापक राव बीकाजी ने करणी माता के आशीर्वाद से 1488ई. में रखी थी। जिसे 'बीकाजी की टेकरी' कहते हैं।
- उसी जगह इस जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण रायसिंह ने 1588 ई. फाल्गुन सुदी 12 विक्रम संवत् 1645 को करवाया।
- यह दुर्ग राती घाटी नामक चट्टान पर बना हुआ है और इस दुर्ग को राती घाटी का किला कहते हैं।
- इस दुर्ग को ज़मीन का ज़ेवर नाम से भी जाना जाता है यह दुर्ग चतुष्कोणीय या चतुर्भुजाकृति में बना हुआ है।
- जूनागढ़ दुर्ग का प्रवेश द्वार सूरजपोल है जहाँ पर पीले पत्थरों से निर्मित 1567 ई. के चित्तौड़ के साके में वीरगति पाने वाले जयमल मेड़तिया और उनके बहनोई आमेट के रावत फत्ता सिसोदिया की गजारूढ़ मूर्तियाँ स्थापित हैं। इन मूर्तियाँ का निर्माण राव रायसिंह द्वारा 1590 ई. में करवाया गया था। बाद इन मूर्तियों को औरंगजेब ने तुड़वा दीं।
- इसमें 37 बुर्जे बनी हुई हैं।

- **दुर्ग में स्थित प्रमुख दर्शनीय स्थल-**

अनूप महल-

- इसका निर्माण महाराजा अनूपसिंह ने करवाया था।
- इस महल में सोने की कलम से काम किया हुआ है।
- यहीं पर बीकानेर के राजाओं का राजतिलक होता था।

लालगढ़ महल -

- इसका निर्माण महाराजा गंगासिंह ने अपने पिता लालसिंह की स्मृति में लाल पत्थरों से करवाया था।

कर्ण महल-

- इसका निर्माण महाराजा अनूपसिंह ने अपने पिता कर्णसिंह की स्मृति में करवाया।

तैंतीस करोड़ देवी – देवताओं का मंदिर है जिसमें सिंह पर सवार गणपति (हेरंब गणपति) की दुर्लभ प्रतिमा स्थित है।
जूनागढ़ दुर्ग में बने संग्रहालय में एक हजार वर्ष पुरानी सरस्वती की प्रतिमा दर्शनीय है।

❖ भटनेर का किला

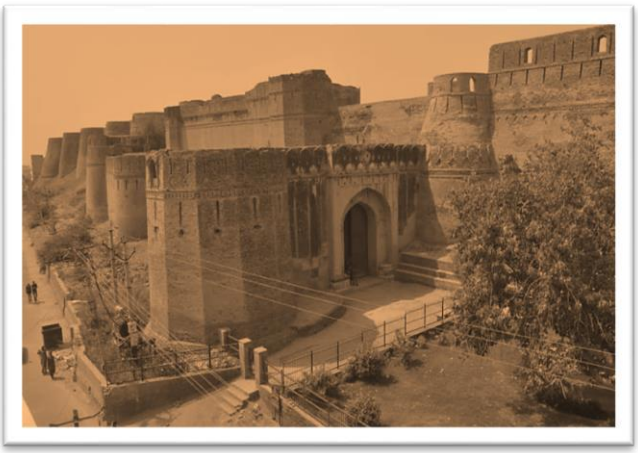

- घग्घर नदी के किनारे स्थित इस दुर्ग का निर्माण 288 ई. में राजा भूपत भाटी ने करवाया।
- इस दुर्ग का प्रमुख शिल्पी कैकया था।
- यह राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग है।
- इस दुर्ग को उत्तरी सीमा का प्रहरी कहते हैं है।
- राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी आक्रमण इस दुर्ग ने सहे हैं।
- इस दुर्ग का पुनः निर्माण 12वीं सदी में अभयराव भाटी ने करवाया था।
- वर्ष 1398 ई. में जब यहाँ के शासक दुलचन्द पर तैमूर लंग का आक्रमण हुआ उस समय मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया जो राजस्थान में एकमात्र था।
- तैमूर लंग अपनी आत्मकथा तुजुक - ए -तैमूरी में इस दुर्ग को अपने जीवन का सबसे मजबूत दुर्ग बताया था।
- 1805 ई. में मंगलवार के दिन बीकानेर के सूरतसिंह ने भटनेर शासक जाब्तासिंह भाटी को हराकर दुर्ग पर अधिकार कर इसका नाम हनुमानगढ़ कर दिया।
- रायसिंह के बेटे दलपत सिंह एवं उसकी पाँच रानियों के स्मारक बने हुए हैं। (दलपतसिंह ने अपने पिता रायसिंह के विरुद्ध भी विद्रोह किया था) इस दुर्ग में दिल्ली के सुल्तान बलबन के भाई शेर खां की कब्र है ।
- इसमें भद्रकाली माता का मंदिर, गुरु गोरखनाथ का मन्दिर बना हुआ है ।

❖ जालौर का किला

- इस दुर्ग का निर्माण प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने 8वीं सदी में सूकड़ी नदी के किनारे करवाया (दशरथ शर्मा के अनुसार) था।
- हीराचंद ओझा के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण 10वीं सदी में धारावर्ष परमार ने करवाया।
- यह दुर्ग कनकाचल / सोनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग को सुवर्ण गिरी, कंचनगिरी, जाबालीपुर (जाबाली ऋषि की तपोभूमि होने के कारण) कहते हैं।
- कीर्तिपाल चौहान ने 1144 ई. में परमारों से यह दुर्ग छीना था।
- वर्ष 1311ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया । इस समय यहाँ का शासक कान्हडदेव चौहान था। बीका दहिया के विश्वासघात के कारण दुर्ग के गुप्त रास्ते की जानकारी अलाउद्दीन खिलजी को लगी। गुप्त रास्ते की खोज के लिए राई का प्रयोग किया गया इस कारण जालौर के बाजार में रात को उच्च दामों पर राई खरीदी गई जिस कारण इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है – राई रा भाव राते ही गिय्या।
- इसके बाद हुए युद्ध में कान्हड़देव चौहान के नेतृत्व में केसरिया तथा जैतलदे के नेतृत्व में जौहर हुआ। इस प्रकार जालौर का प्रथम साका हुआ तथा अलाउद्दीन ने जालौर का नाम जलालाबाद कर दिया।
- खिलजी ने दुर्ग में परमार राजा भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला को तोड़कर एक मस्जिद का निर्माण करवाया जिसे अलाउद्दीन को मस्जिद या तोप मस्जिद कहते हैं।
- वत्सराज के दरबारी विद्वान उद्योतन सूरि ने इस दुर्ग में कुवलयमाला ग्रन्थ की रचना की।
- इस दुर्ग में मल्लिक शाह पीर की दरगाह, चामुण्डा माता मन्दिर, झालरबावड़ी, सोहनबावड़ी, परमार कालीन कीर्तिस्तम्भ, दहिया की पाल, सुन्धा शिलालेख, जालन्धरनाथ की गुफा व छतरी, बीरमदेव चौकी, जोगमाया मन्दिर, दो मंजिला रानी महल स्थित हैं।
- इस दुर्ग के सामने नटनी की छतरी स्थित है। (NOTE : - नटनी का चबूतरा पिछोला झील में स्थित है)
- जालौर दुर्ग के लिए हसन निजामी ने कहा है, कि यह एक ऐसा किला है, जिसका दरवाजा कोई भी आक्रमणकारी खोल नहीं सका।

❖ सिवाणा का किला

- बालोतरा जिले में स्थित (हलेश्वर पहाड़ी पर) भोज के पुत्र वीरनारायण पंवार ने इसका निर्माण 954 ई. करवाया था।
- कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण इसे 'कूमट दुर्ग भी कहते हैं।
- इसका प्राचीन नाम कुम्बाना था।
- इसे मारवाड़ शासकों की संकटकालीन आश्रयस्थली कहते हैं। (राव चन्द्रसेन एवं मालदेव ने शरण ली थी)
- जालौर दुर्ग को जीतने से पहले इस दुर्ग को जीतना अनिवार्य था जिस कारण इसे जालौर दुर्ग की कुंजी कहते हैं ।
- इसी दुर्ग में प्रजामंडल आंदोलनों के दौरान 'शेर-ए-राजस्थान जयनारायण व्यास को बंदी बनाकर रखा गया था।
- वर्ष1308 ई. में इस दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति कमालुद्दीन कुर्ग ने आक्रमण किया। इस समय दुर्ग कान्हडदेव चौहान के भतीजे शीतलदेव चौहान ने केसरिया तथा उसकी रानी मैणादे ने जौहर किया जोकि इस दुर्ग का प्रथम साका था।
- भावला पंवार ने दुर्ग में स्थित पेयजल में गाय का रक्त मिलाकर अपवित्र कर शीतलदेव चौहान के साथ विश्वासघात किया ।
- खिलजी ने सिवाणा का नाम खैराबाद कर दिया।
- वर्ष1582 ई. में यहाँ का शासक कल्याणमल (इस योद्धा की साहसिक गाथा पृथ्वीराज राठौड़ ने 'कल्ला रायमल्लोत की कुंडलिया' में लिखी है) था जिस पर जोधपुर के मोटाराजा उदयसिंह ने अकबर के कहने पर आक्रमण किया जिससे सिवाणा का दूसरा साका हुआ। इस युद्ध में कल्याणमल वीरगति को प्राप्त हुआ तथा उसकी पत्नी हाड़ी रानी ने दुर्ग में ललनाओं के साथ जौहर का अनुष्ठान कर लिया। कहा जाता है कि कल्याणमल का सिर कटने के बाद भी लड़ते रहे। इस दुर्ग में राजा कल्याणमल की दो समाधियां हैं। एक समाधि कल्याणसिंह के सिर की है तो दूसरी समाधि कल्याणसिंह के धड़ की है।

❖ आमेर का किला

- इस दुर्ग का निर्माण मीणाओं ने किया।
- यह दुर्ग कालीखोह पहाड़ी पर स्थित है।

- 1207 ई. में दुल्हेराय (तेजकरण) के पुत्र कोकिलदेव ने मीणाओं से छीनकर इस पर अधिकार कर लिया।
- विशप हैबर का कथन- ''मैंनें क्रेमलिन में जो कुछ देखा और अलब्रह्मा के बारे में जो कुछ सुना उससे बढ़कर भी इस दुर्ग के महल हैं।''
- इस दुर्ग में पाँच द्वार हैं
- भारमल ने इसका पुनः निर्माण तथा मानसिंह प्रथम 1592 ई. ने इसे आधुनिक रूप दिया।

इस दुर्ग में स्थित प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में जलेब चौक, सिंह पोल, गणेश पोल, दीवान - ए- आम, दीवान- ए-खास, दिलखुश महल, बाला बाई की साल, मावठा तालाब, सुख मन्दिर, सुहाग मन्दिर, चतरनाथ जोगी के स्मारक,
  सीतारामजी का मन्दिर, शिलामाता मन्दिर, जनानी ड्योढ़ी, बुखारा गार्डन, मीना बाजार, केशर क्यारी, भूलभूलैया, अम्बीकेश्वर महादेव मंदिर, मानसिंह महल, कदमी महल (आमेर का दुर्ग का सबसे पुराना महल कदमी महल है जिसका निर्माण 1237 ई. मे राजदेव ने करवाया। इन महलों में मीणाओं द्वारा कच्छवाहों का राजतिलक होता है)
- इसमें कछवाह वंश का राजतिलक होता था) आदि दर्शनीय स्थल हैं।
- यह दुर्ग जयगढ़ दुर्ग से सुरंग से जुड़ा है। इस दुर्ग में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक आते हैं।
- दिवान - ए - खास महल का निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह ने करवाया इस महल पर कांच का काम किया है। जिस कारण इसे शीशमहल भी कहते हैं।

❖ जयगढ़ का किला

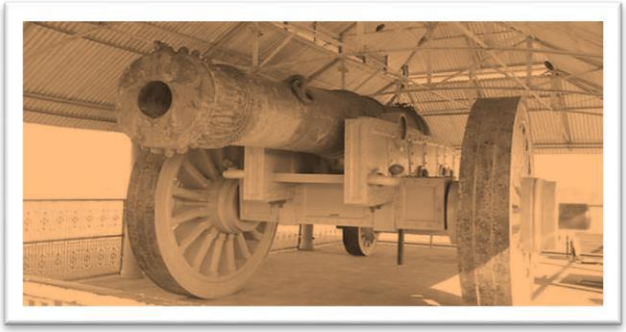

- इस दुर्ग का निर्माण मानसिंह ने शुरू करवाया तथा पूर्ण सवाई जयसिंह ने करवाया।
- यह दुर्ग चिल्ह / ईगल पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग में प्रवेश के तीन मार्ग हैं 1. डूंगरपोल 2. भैरवपोल 3. अवनी पोल
- दुर्ग में राम, हरिहर व काल भैरव के प्राचीन मन्दिर हैं।
- इसे रहस्यमयी दुर्ग, संकटमोचन दुर्ग भी कहते हैं।
- यह टांकों व सुरंगों हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ राजस्थान का सबसे बड़ा टांका स्थित है। यह दुर्ग आमेर दुर्ग से एक सुरंग से जुड़ा है। इस दुर्ग में विजयगढ़ी महल है जिसे लघु दुर्ग कहते हैं जिसमें सवाई जयसिंह ने अपने भाई विजय सिंह को कैद किया। इसी विजयगढ़ी में आमेर शासकों का शस्त्रागार, खजाना व तोप बनाने का कारखाना था जो एशिया का एकमात्र तोपखाना था।
- विजयगढी के पास एक सात मंजिला प्रकाश स्तम्भ है जो ' दीया बुर्ज ' कहलाता है।
- इंदिरा गाँधी ने गुप्त खजाने की खोज के लिये इस दुर्ग में वर्ष 1975-1976 में खुदाई करवाई थी।
- यहाँ एशिया की सबसे बड़ी तोप जयबाण तोप रखी है जिसे एक ही बार चलाया गया। इसका गोला चाकसू में गिरा जहाँ गोलेलाव तालाब बन गया। इस तोप की मारक क्षमता 35 किमी, वजन 50 टन, लम्बाई 20 फीट, नली का व्यास करीब 11 इंच व गोले का वजन 50 किलोग्राम था।
- इस दुर्ग में एक कठपुतली घर व चारबाग शैली का उद्यान स्थित है। इस दुर्ग में लक्ष्मी निवास, विलास मंदिर, आराम मंदिर, राणावतजी का चौक, सुभट निवास (दीवान-ए-आम), खिलवत निवास (दीवान-ए- खास) स्थित है।

❖ नाहरगढ़ का किला

- इसका निर्माण 1734 ई. में सवाई जयसिंह ने मराठों से जयपुर की रक्षा हेतु करवाया।
- किवदन्ती के अनुसार इस दुर्ग का प्रतिदिन में बनाया गया निर्माण नाहरसिंह बाबा के चमत्कार के कारण टूट जाता इससे घटना के प्रभाव को निरस्त करने के लिए पण्डित रत्नाकर पुण्डरीक के कहने पर नाहरसिंह बाबा के नाम पर इस दुर्ग का नाम नाहरगढ़ रख दिया।
- इसे महलों का दुर्ग व मीठड़ी का दुर्ग, सुदर्शनगढ़ भी कहते हैं।

- इसका निर्माण 1464 ई. में चौहान शासकों द्वारा करवाया था।

❖ **कुचामन का किला**

- डीडवाना-कुचामन जिले में स्थित है।
- इसका निर्माण मेड़तिया शासक जालिम सिंह ने करवाया था।
- इसे 'जागीरी किलो का सिरमौर' भी कहते हैं।

❖ **नागौर का किला**

- इस दुर्ग का निर्माण सोमेश्वर चौहान के सामन्त कदम्बवास ने 1154 ई. में करवाया।
- इस दुर्ग को नागदुर्ग, नागाणा, अहिच्छत्रपुर भी कहते हैं।
- बख्त सिंह ने इस दुर्ग में सर्वाधिक निर्माण करवाया तथा अपने पिता की हत्या कर यहीं पर शरण ली थी।
- इस दुर्ग की प्रमुख विशेषता यह है की बाहर से चलाए गए गोले दुर्ग के ऊपर से सीधे निकल जाते हैं।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख दर्शनीय स्थलों में शीश महल, बादलमहल, अकबर द्वारा निर्मित शुक्रतालाब, अभयसिंह के महल, बख्तसिंह के महल, अमरसिंह की छतरी (16 खम्भे), बंशीवाला का मन्दिर, अतारकीन का दरवाजा (निर्माण - इल्तुतमिश)
  हमीमुद्दीन नागोरी की दरगाह, अकबरी मस्जिद आदि हैं।
- वर्ष 2007 में साफ-सफाई के कारण यूनेस्को ने इस दुर्ग को अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस दिया।

❖ **भैंसरोड़गढ़ का किला**

- चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
- एक व्यापारी द्वारा निर्मित।
- चम्बल एवं बामनी नदियों के संगम पर
- इसे 'राजस्थान का वेल्लोर' कहते हैं। (जलदुर्ग)

❖ **मालकोट का किला**

- मेड़ता (नागौर)
- निर्माण राव मालदेव राठौड़

❖ **मोहनगढ़ का किला**

- जैसलमेर जिले में स्थित है।
- निर्माण जैसलमेर महाराजा जवाहर सिंह के समय।
- भारत का अंतिम किला है।

❖ **तिमनगढ़ का किला**

- यह दुर्ग बयाना करौली में स्थित है।
- यह दुर्ग त्रिभुवनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग को इस्लामाबाद के नाम से भी जाना जाता है।
- इस दुर्ग का निर्माण 11वीं सदी में तवनपाल ने करवाया।
- दुर्ग में जनद भोजाई का कुआँ स्थित है।

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

1. कौन सा दुर्ग अरावली पर्वतमाला में स्थित है?

A. सुजानगढ़ B. अचलगढ़
C. सोनारगढ़ D. लोहागढ़ **(B)**

2. राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग किस जिले में स्थित है?

A. जैसलमेर B. बीकानेर
C. भीलवाड़ा D. जयपुर **(D)**

3. प्रसिद्ध लोहागढ़ दुर्ग किस जिले में है?

A. चूरू B. अलवर
C. भरतपुर D. बीकानेर **(C)**

4. एक खंभा महल के नाम से प्रसिद्ध प्रहरी मीनार का निर्माण किसने करवाया?

A. महाराजा अजीत सिंह B. महाराजा जसवंत सिंह
C. राव मालदेव D. महाराणा कुंभा **(A)**

5. कुंभा द्वारा निर्मित विजय स्तंभ कितने मंजिलों का है?

A. 5 B. 7
C. 9 D. 11 **(C)**

6. अबुल फजल ने किस दुर्ग के विषय में कहा कि यह दुर्ग इतना ऊँचा है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर की पगड़ी गिर जाती है?

A. तारागढ़ दुर्ग B. मेहरानगढ़ दुर्ग
C. कुंभलगढ़ दुर्ग D. गागरोण दुर्ग **(C)**

7. किस दुर्ग को राजस्थान का वेल्लोर कहा जाता है ?

A. कुंभलगढ़ B. भैंसरोडगढ़
C. बागा किला D. गढ़ बिठली दुर्ग **(B)**

8. गुजरात के शासक बहादुर शाह ने चित्तौड़ दुर्ग पर आक्रमण अपने किस सेनापति के नेतृत्व में किया था?

A. लाल सिंह B. रूमी खाँ
C. अखतर सिंह D. मोहम्मद तैयब **(B)**

9. तिमनगढ़ का किला स्थित है?

A. अलवर B. भरतपुर
C. करौली D. राजसमंद **(C)**

10. राजस्थान का एकमात्र दुर्ग जो मुस्लिम दुर्ग निर्माण पद्धति में बना है?

A. शेरगढ़ का किला B. मैंगनीज दुर्ग
C. चुरू का किला D. जूनागढ़ **(B)**

भाव-प्रवरता का प्राचुर्य

- राजस्थानी चित्रकला रस-प्रधान है।
- भावनाओं व भक्ति और श्रृंगार तथा राधाकृष्ण की माधुर्य भावना का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है।

विषय वस्तु का वैविध्य

- राजस्थानी चित्रकला विषय की दृष्टि से अत्यधिक विस्तृत है।
- राधाकृष्ण की विभिन्न लीलाओं, रामकथा, महाभारत और भागवत पुराण की विभिन्न कथायें, नायक नायिका, भेद, राग-रागिनी, बारह-मासा, ऋतुवर्णन, दरबारी जीवन, उत्सव, शिकार, राजा रानियों का चित्रांकन, लोक कथायें आदि असंख्य विषयों पर राजस्थानी चित्रकला आधारित है काव्य

आँखों की बनावट	चित्र शैली
तिरछी व चकोर के समान आँखे	नाथद्वारा शैली
मृग के समान आँखे	बीकानेर, कोटा शैली
बादाम के समान आँखे	जोधपुर शैली
मछली के समान आँखे	मेवाड़ शैली
कमल व खंजन के समान आँखे	किशनगढ़ शैली
बड़ी व मछली के समान आँखे	जयपुर, अलवर शैली

का चित्रण इस शैली की अपनी निजी विशेषता है। राजस्थान में विषयों को लेकर इतने चित्र उपलब्ध है कि वे सभी एक जीवित संसार प्रस्तुत करते हैं।

देशकाल की अनुरूपता

- राजपूत सभ्यता, संस्कृति और तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण राजस्थानी चित्रकला में किया गया है।
- दुर्ग, प्रासाद, हवेलियाँ, दरबार आदि का राजपूती वैभव एवं भक्ति काल और रीति काल का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला में ही पाया जाता है।

प्राकृतिक परिवेश की अनुरूपता

- राजस्थानी चित्रकला में प्राकृतिक सरोवर, वन-उपवन, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ, पक्षियों से भरे हुए निकुंज, मृग, मयूर, सिंह, हाथी आदि का सजीव चित्रांकन किया गया है।

नारी सौंदर्य

- राजस्थानी चित्रकला शैली में नारी सुन्दरता की खान है।
- चित्रकला शैली में भारतीय नारी के आदर्श **सौंदर्य** की उसमें पूरी छटा है।
- राजस्थान चित्रकला ने भारतीय नारी के **सौंदर्य** को उभारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नायिकाओं के आभूषण, अंग प्रत्यंग, नासिका और नेत्रों के अंकन अत्यन्त कलापूर्ण चित्रित हुए हैं।

वृक्ष	चित्रशैली
कदम्ब	उदयपुर (मेवाड़) शैली
केला	किशनगढ़(नाथद्वारा) शैली
खजूर	कोटा, बूंदी शैली
पीपल	अलवर, जयपुर शैली
आम	जोधपुर, बीकानेर शैली

पशुपक्षी	चित्रशैली
कौंआ, चील, ऊँट, घोड़े	जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी व चकोर	उदयपुर शैली
गाय	नाथद्वारा शैली
मोर व घोड़ा	जयपुर,अलवर शैली

शैली	रंग
मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर	पीला
नाथद्वारा	पीला-हरा
अजमेर	पीला-लाल-हरा-बेंगनी
किशनगढ़	श्वेत, गुलाबी
मेवाड़	पीला-लाल
कोटा	पीला-हरा-नीला
बूंदी	हरा
जयपुर	केसरिया, हरा, लाल

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं	
संस्था	स्थान
चितेरा	जोधपुर
धोरां	जोधपुर
तूलिका कलाकार परिषद	उदयपुर
टखमण -28	उदयपुर
कलावृत	जयपुर
पेंग	जयपुर
आयाम	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप	जयपुर
अंकन	भीलवाड़ा

ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं

- **ललित कला अकादमी -जयपुर**
  - स्थापना 24 नवम्बर, 1957
  - इस अकादमी का प्रमुख कार्य कलात्मक गतिविधियों का संचालन करना, कला प्रदर्शनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फैलोशिप प्रदान करना होता है
  - राजस्थान की दृश्य तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
  - राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।
- **राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर**

- तल्लीनाथ जी राजस्थान के एकमात्र लोकदेवता जिन्होंने वृक्ष काटने पर रोक लगाई थी।

➢ **वीर फत्ताजी**

- जन्म – साथूँ गाँव (जालौर)।
- गाँव पर लूटेरों के आक्रमण के समय इन्होंने भीषण युद्ध किया।
- इनकी याद में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला नवमी को मेला भरता हैं।

➢ **बाबा झूंझारजी**

➢ जन्म – इमलोहा गाँव (नीमकाथाना)।
➢ भगवान राम के जन्म दिवस रामनवमी को स्यालोदड़ा (नीमकाथाना) में इनका मेला भरता हैं।
➢ बाबा झूंझारजी का स्थान सामान्यतः खेजड़ी के पेड़ के नीचे होता हैं।

➢ **वीर बिग्गाजी**

- जन्म – जांगल प्रदेश । रीडीगाँव (बीकानेर)
- पिता - राव मोहन, माता - सुल्तानी देवी।
- बीकानेर के जाखड़ समाज के कुल देवता।
- मुस्लिम लूटेरों से गायों की रक्षा की।

➢ **डूंगजी-जवाहरजी (गरीबों के देवता, राजस्थान के रोबिन हुड)**

- सीकर (पाटोदा) जिले के लूटेरे लोकदेवता, जो धनवानों व अंग्रेजों से धन लूटकर गरीबों में बांट देते थे।
- 1857 की क्रांति में सक्रिय भाग लिया।
- नसीराबाद छावनी को लुटा

➢ **हरिराम बाबा**

- ये सर्प दंश का इलाज करते थे।
- सुजानगढ़ नागौर मार्ग पर झोरड़ा गाँव (नागौर) में इनका पूजा स्थल हैं।
- गुरु - भूरा
- पिता – रामनारायण
- माता – चन्दनी देवी
- साँप के बाम्बी की पूजा होती हैं ।

➢ **पनराजजी**

- जन्म – नगा गाँव (जैसलमेर)।
- मुस्लिम लूटेरों से काठौड़ी गाँव के ब्राह्मणों की गायों को छुड़ाते हुए शहीद हुए।
- इनकी स्मृति में पनराजसर गाँव (जैसलमेर) में वर्ष में दो बार मेला भरता हैं।

➢ **केसरिया कुँवरजी**

- गोगाजी के पुत्र जो लोकदेवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- इनके थान पर सफेद रंग की ध्वजा फहराते हैं।

➢ **भोमियाजी**

- गाँव-गाँव में भूमि रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते हैं ।

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता

1. शुद्धि आंदोलन का संबंध किस लोकदेवता से हैं ?
A. पाबूजी B. गोगाजी
C. रामदेव जी D. तेजाजी **(C)**

2. चौंबीस बाणियां नामक ग्रंथ का संबंध किस लोकदेवता से हैं ?
A. पाबूजी B. गोगाजी
C. रामदेव जी D. तेजाजी **(C)**

3. गोगाजी के जागरण में प्रयोग किया जाने वाला वाद्य यंत्र कौन सा हैं ?
A. रावण हत्था B. बांसुरी
C. डेरु D. चंग **(C)**

4. गोगामेडी का निर्माण किसने करवाया जिसके मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह अंकित हैं ?
A. अलाउद्दीन खिलजी
B. शेरशाह सूरी
C. गंगा सिंह
D. फिरोज़ शाह तुगलक **(D)**

5. ' भूरिया बाबा ' आराध्य देवता हैं
A. गोड़वाड़ के मीणाओं के
B.देवड़ा के राजपूतों के
C. अजमेर के चौहानों के
D. उदयपुर के सिसोदियों के **(A)**

6. बालोतरा जिले में तिलवाड़ा गाँव में स्थित मंदिर किस लोकदेवता से सम्बन्धित हैं ? .
A. गोगाजी
B. बाबा रामदेव
C.मेहाजी
D. मल्लीनाथजी **(D)**

7. निम्न में से कौन राजस्थान के लोकदेवता नहीं हैं ?
A. नामदेव जी B. पाबू जी
C. गोगा जी D. रामदेव जी **(A)**

8. गोगाजी का मेला किस माह में भरता हैं ?
A. श्रावण B. फाल्गुन
C. माघ D. भाद्रपद **(D)**

9. निम्नलिखित में से कौन सा सुमेलित नहीं हैं ?

लोकदेवता	मुख्य स्थल
A. गोगाजी	गोगामेड़ी
B. मल्लिनाथ	पिचियाक
C. पाबूजी	कोलू
D. तेजाजी	परबतसर **(B)**

अध्याय – 13

महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल

राज्य में पर्यटन

राजस्थान पर्यटन नीति 2020

- **लागू 9 सितंबर 2020**
- यह अंकित 5 वर्ष या नई नीति आने तक लागू रहेगी।

उद्देश्य

- राजस्थान को अग्रणी पर्यटन ब्रांड के रूप में बढ़ावा देना।
- सड़क, रेल और हवाई मार्ग के माध्यम से पर्यटन स्थलों की कनेक्टिविटी में सुधार करना।
- पर्यटकों के लिए आवासीय बुनियादी ढांचे का विस्तार करना।
- पर्यटकों (विशेषकर महिला) के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान करना
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना तथा नये पर्यटन स्थलों उत्पादों एवं सेवाओं को बढ़ावा देना।
- स्वरोजगार पैदा करने के लिए पर्यटन विशिष्ट कौशल विकास की सुविधा प्रदान करना।
- निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करना।
- पर्यटन इकाइयों की स्थापना के लिए अनुमोदन (Approval) प्रदान करने के लिए प्रशासनिक ढांचे को सशक्त बनाना।
- बेहतर नीति निर्माण और पूर्वानुमान के लिए बाजार अनुसंधान (Market research) को बढ़ावा देना।

राजस्थान पर्यटन के विभिन्न आयाम:

- राजस्थान में सबके लिए कुछ ना कुछ है। (Something for everyone)

ऐतिहासिक स्मारक:

Special heritage/craft village:
गाँव / गाँव के समूह की पहचान की जाएगी एवं उन्हें स्पेशल हेरिटेज विलेज अथवा स्पेशल क्राफ्ट विलेज का दर्जा दिया जाएगा। इसकी जिम्मेदारी जिला पर्यटन विकास समिति को दी गई है।

- **मरुस्थलीय पर्यटन:**
  हॉर्स सफारी, कैमल सफारी, डेजर्ट कैंप, रेत के धोरों, शूटिंग के लिए आकर्षक स्थलों पर फोकस किया जा रहा है।
- **एडवेंचर टूरिज्म:**
  राजस्थान में एडवेंचर टूरिज्म की भी पर्याप्त संभावनाएं है। जैसे Aero tourism, aqua tourism, land based tourism.
- बॉर्डर टूरिज्म
- ग्रामीण पर्यटन
- **एजुकेशन टूरिज्म कोटा शहर को शिक्षा नगरी के रूप में जाना जाता है। जयपुर और सीकर भी शिक्षा के बड़े हब बनकर उभरे हैं।**
- वैलनेस टूरिज्म राजस्थान में अनेक औषधीय पादप पाए जाते हैं। जुलाई 2021 से राजस्थान सरकार घर-घर औषधि योजना शुरू करने जा रही है।

ट्राईबल टूरिज्म:- उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ को टाइबल सर्किट के रूप में विकसित किया गया है।

सांस्कृतिक पर्यटन

धार्मिक पर्यटन

- वेडिंग टूरिज्म (विवाद पर्यटन)

वेडिंग टूरिज्म (विवाद पर्यटन)

क्राफ्ट टूरिज्म:

दिल्ली हाट की तर्ज पर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर में बाजार।

MICE tourism:

(Meeting incentives conference exhibition) बड़े सेमिनार, सम्मेलनों के आयोजन को बढ़ावा देना।

Roots tourism:

प्रवासी राजस्थानियों के लिए राजस्थान कॉलिंग अभियान चलाया गया।

राजस्थान में फिल्म पर्यटन:

- फिल्म सिटी की स्थापना के लिए रिप्स के तहत एक अनुकूलित पैकेज, 2019 परियोजना प्रमोटर को पेश किया जाएगा।
- **एक फिल्म पर्यटन प्रकोष्ठ (Cell) की स्थापना की जाएगी।** ताकि आवेदन के 15 दिनों के भीतर सभी आवश्यक अनुमोदन उपलब्ध कराए जा सकें।
- राज्य सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में स्मारकों पर फिल्म शूटिंग के लिए सभी शुल्क और शुल्क से छूट दी जाएगी।
- **राजस्थान में शूट की गई किसी भी फिल्म की कुल उत्पादन लागत की 15% तक अग्रिम सब्सिडी प्रदान की जाएगी।**
- हेरिटेज साइट के लिए स्वच्छ स्मारक योजना शुरू की जाएगी।
- लोक निर्माण विभाग (PWD) पर्यटन स्थलों तक अंतिम छोर से कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगा।
- सड़कों के लिए नियोजित (Planned) बजट का 1% पर्यटन स्थलों के लिए सड़क सम्पर्क पर खर्च किया जाएगा।
- स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के तहत नियोजित बजट खर्च का 5% पर्यटन से जुड़ी परियोजनाओं पर खर्च किया जाएगा।
- 5 से 20 कमरों की पेशकश करने वाले प्रतिष्ठानों को बढ़ावा देने के लिए एक गेस्ट हाउस योजना शुरू की जाएगी। इसे आरटीयूपी में परिभाषित किया जाएग
- राजस्थान पर्यटन व्यापार (सुविधा एवं विनियमन) अधिनियम 2010 में उपयुक्त संशोधन किए जाएंगे ताकि इसे और अधिक - प्रभावी बनाने के लिए पर्यटक सहायता बल को अधिक कार्यात्मक शक्तियाँ / पुलिस अधिनियम शक्तियाँ प्रदान की जा सकें।
- पर्यटन विकास के लिए नीतिगत दिशा-निर्देश प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में राज्य पर्यटन सलाहकार समिति का गठन किया जाएगा।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

whatsapp - https://wa.link/c37ssj 1 web.- https://shorturl.at/mpOV7

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	11419512037002 2	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
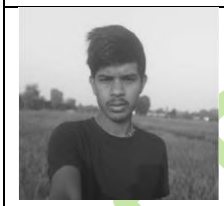	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner
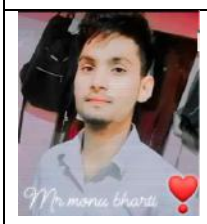	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
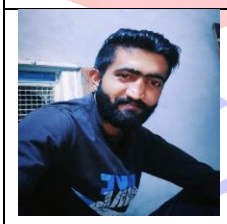	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur
	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
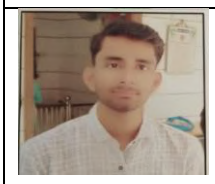	**Mahaveer**	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others……

FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/c37ssj

Online order करें – https://shorturl.at/mpOV7

Call करें - 9887809083